समानान्तर जीवन

1907 में जन्मीं

रेचल कार्सन

तथा

फ्रीडा काहलो

लेखनः जूली नटसन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

समानान्तर जीवन

रेचल कार्सन
तथा
फ्रीडा काहलो

लेखनः जूली नटसन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

Julie Knutson

जूली नटसन का जन्म वर्ष वही है जो वीनस विलियम, चैल्सी क्लिन्टन तथा लिन-मैन्युएल मिरैन्डा का है। वे इतिहास की अध्येता व पूर्व शिक्षिका हैं। वे उत्तरी इलिनॉय में अपने पति व पुत्र के साथ रहती हैं।

अनुक्रम

अध्याय 1

1907 में आपका स्वागत है

अध्याय 2

रेचल कार्सन (जन्म 27 मई 1907)

अध्याय 3

फ्रीडा काहलो (जन्म 6 जुलाई 1907)

कालक्रम

अध्याय 1

1907 में पर्यावरण लेखिका रेचल कार्सन तथा चित्रकार फ्रीडा काहलो का जन्म हुआ था। इस वर्ष बड़ी संख्या में लोग युरोप से संयुक्त राज्य अमरीका में बसने आए। दुनिया भर में महिलाओं को मत देने के अधिकार की मांग उठ रही थी। खोजी ख़बरनवीसों ने बेईमान व्यापारों का पर्दाफ़ाश किया। उन्हें प्रगतिवादी सुधारकों का समर्थन मिला जो असमानता के मसले को संबोधित करना चाहते थे। शहर बढ़ रहे थे और ग्रामीण इलाके सिकुड़ते जा रहे थे। कुछ नए आविष्कारों ने, जैसे कपड़े धोने की मशीन ने, घरेलू जीवन में क्रान्ति ला दी थी। राजनीति व तकनीक की इन प्रमुख घटनाओं ने इन दोनों स्त्रियों के जीवनों और उनकी आवाज़ों को प्रभावित किया।

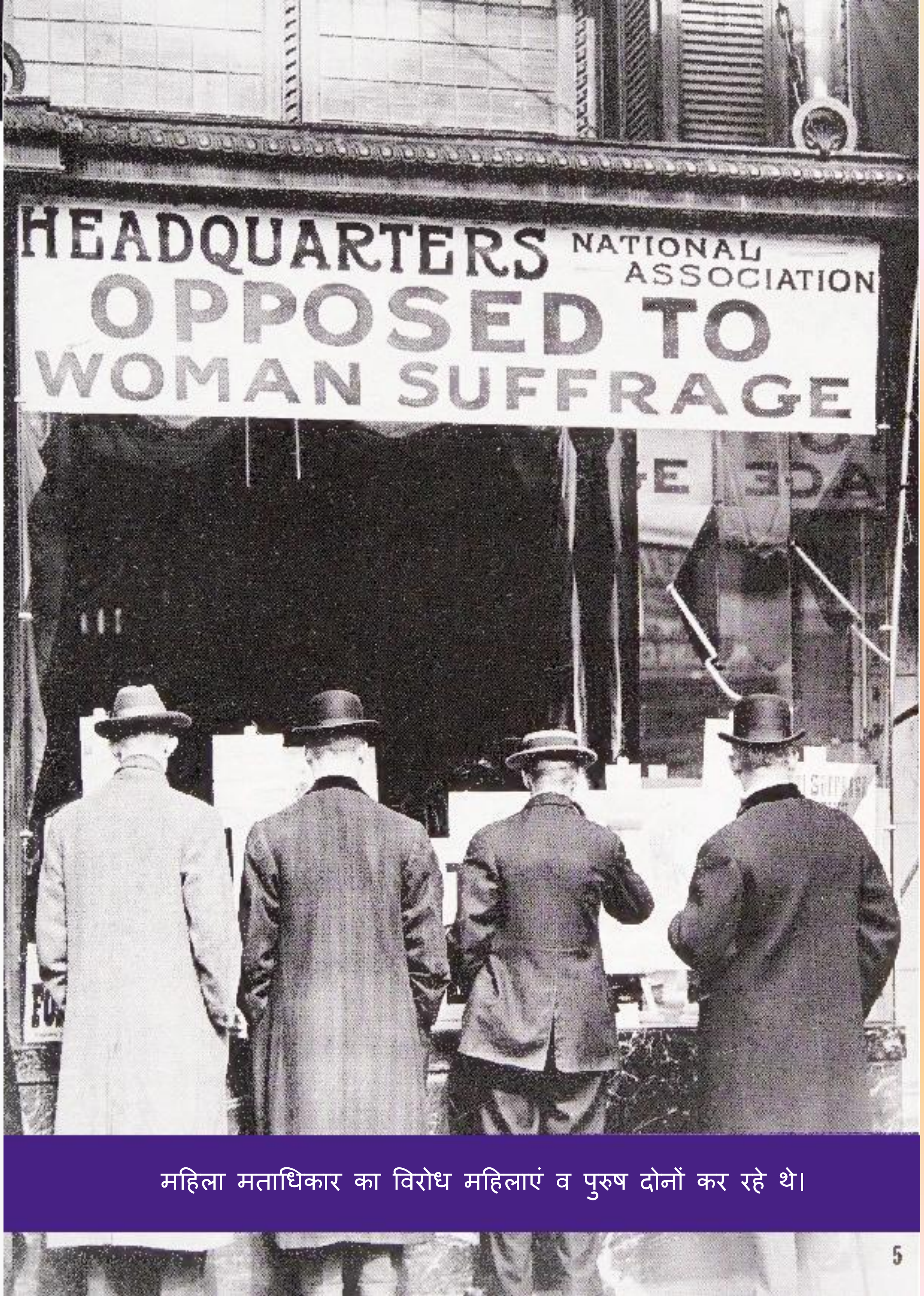

महिला मताधिकार का विरोध महिलाएं व पुरुष दोनों कर रहे थे।

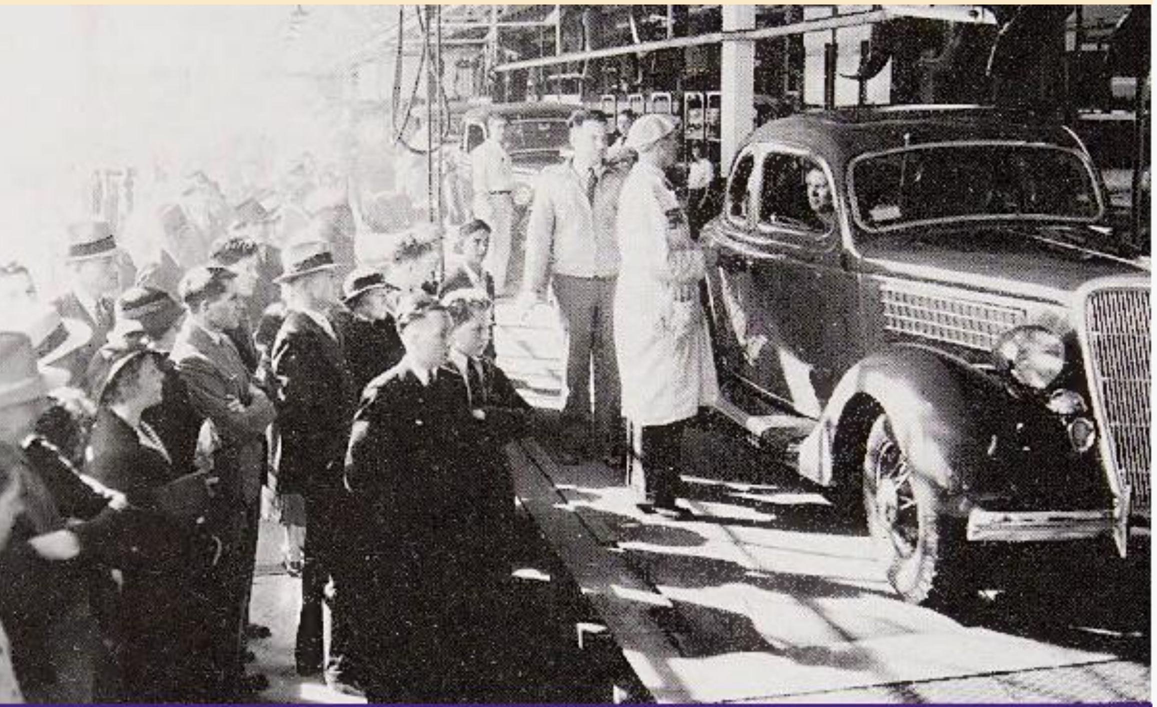

हैनरी फोर्ड ने 1908 में मॉडल टी का आविष्कार किया। उनकी असैम्बली लाइन ने चीज़ों को बनाने के तरीके को हमेशा के लिए बदल दिया।

औद्योगीकरण तथा शहरीकरणः रेचल तथा फ्रीडा उस समय जी रही थीं, जब नई तकनीकें आ रही थीं, काम करने के तरीके बदल रह थे, और आबादी के केन्द्र भी बदल रहे थे। औद्योगीकरण ने हमेशा के लिए यह बदल दिया कि लोग कैसे और कहाँ जिएंगे। औद्योगीकरण के बाद चीज़ें छोटे स्तर पर हाथ से नहीं बनाई जाती थीं। उन्हें कारखानों में बड़े स्तर पर बनाया जाने लगा था। ये कारखाने अधिकतर शहरी इलाकों में केन्द्रित थे। क्योंकि इन कारखानों में रोज़गार मिल सकता था, कई लोग अपने गाँवों से प्रवास कर शहरों में आ बसे। संयुक्त राज्यों के शहरों में रहने वाली आबादी में 1850 तक 15.3 प्रतिशत का उछाल आया, और 1900 तक 39.7 प्रतिशत का। यह क्रम बीसवीं सदी में जारी रहा। संरक्षणवादियों ने सार्वजनिक भूमियों तथा वन्य जीवन के संरक्षण की परियोजनाओं की मांग की।

महिलाओं के अधिकारः रेचल तथा फ्रीडा का जन्म उस समय हुआ जब राजनीति, शिक्षा या काम में पुरुषों तथा स्त्रियों की समानता की गारंटी नहीं देती थी। स्कूलों में लड़कियाँ केवल गृहणी बनने की कक्षाएं ही ले सकती थीं। सार्वजनिक जीवन में केवल पुरुषों की ही भूमिका थी। महिला मताधिकारवादी इस स्थिति को बदलने तथा स्त्रियों के मताधिकार के लिए, और इसके ज़रिए सार्वजनिक जीवन में भागीदारी करने के लिए संघर्ष कर रहे थे। संयुक्त राज्य अमरीका में महिलाओं को मत देने का अधिकार 1920 में मिला। पर मैक्सिको में यह 1953 में ही संभव हुआ।

आवाज़ से हमारा क्या मतलब है:

"आवाज़ से हमारा मतलब व्यक्ति की दुनिया को देखने की दृष्टि और उसे अभिव्यथ्त करने की इच्छा से है। प्रत्येक व्यक्ति की आवाज़ उसके अनूठे अनुभवों से ढ़ाली जाती है। लोग अपनी आवाज़ को विभिन्न तरीकों से अभिव्यक्त करते हैं। इन तरीकों में राजनीतिक विरोध से लेकर, सार्वजनिक रूप से बोलना, दृश्य कला के माध्यम से अपनी बात अभिव्यक्त करना, आदि शामिल हैं।

रेचल कार्सन

(जन्म 27 मई 1907)

रेचल कार्सन ने कम उम्र में ही लेखन में अपनी रुचि को अपने प्रकृति प्रेम से जोड़ दिया था। वयस्क बनने पर उन्होंने अपनी जुड़वाँ रुचियों का उपयोग जनता को पर्यावरण के मुद्दे पर शिक्षित करने के लिए किया। इस प्रक्रिया में उन्होंने मनुष्य द्वारा किए गए चयनों का हमारे ग्रह पर जो प्रभाव पड़ता है उस विषय में हमारी सोच को ही बदल डाला।

साइलैन्ट स्प्रिंग

"अगर हम इन रसायनों के साथ इतनी आत्मीयता से जीने वाले हैं - उन्हें खाने और पीने वाले हैं, हमारी हरेक अस्थि मज्जा (बोन-मैरो) में उसे लेने वाले हैं - तो हमें उनकी ताकत के बारे में भी कुछ जान लेना चाहिए।

- रेचल कार्सन, *साइलैन्ट स्प्रिंग*

रेचल की पुस्तक *साइलैन्ट स्प्रिंग* ने लोगों को यह सोचने पर मजबूर किया कि उद्योग का प्रकृति पर क्या प्रभाव पड़ता है।

बिएट्रिक्स पॉटर ने अपनी रचना *द टेल ऑफ पीटर रैबिट* को 1901 में खुद ही प्रकाशित किया था।

आरंभिक वर्षः तलाशना आवाज़ को

दुनिया को देखने का रेचल का नज़रिया चन्द प्रमुख व्यक्तियों और कुछ निजी अनुभवों से प्रभावित था। उसने अपने आरंभिक वर्ष पैन्सिलवेनिया के स्प्रिंगडेल में स्थित परिवार के 64 एकड़ (26 हैक्टेयर) के फार्म में अपनी माँ मारिया के साथ बिताए थे। परिवार के बगीचे रेचल की पहली कक्षाएं थीं। मुर्गियाँ, सूअर और कुत्ते उनके पहले साथी थे। यहाँ रेचल ने अवलोकन करना सीखा। रेचल और उसकी माँ साथ-साथ पक्षियों और कीटों को सुनते। दोनों ने साथ-साथ प्रकृति और पशुओं की कहानियाँ पढ़ीं और उन्हें पसन्द किया। उनकी चहेती लेखिका थीं बिएट्रिक्स पॉटर।

बचपन में ही रेचल अपने छोटे से समुदाय पर औद्योगीकरण के प्रभाव की गवाह रहीं। रेचल के बड़े होने के साथ-साथ उनके कस्बे में कारखानों की संख्या भी बढ़ी। सिप्रंगडेल में एक गोंद का कारखाना, एक बिजली कम्पनी, एक प्रकाश उपकरण निर्माता आए। इन कारखानों के आने से इलाके की बू, उसकी आवाज़ों और दिखावट सदा के लिए बदल गए। कार्सन परिवार ने इन बदलावों का विरोध किया। हालांकि रेचल का परिवार धनी नहीं था, उसे पैसों की ज़रूरत भी थी, इसके बावजूद रेचल के पिता ने अपने फार्म का एक हिस्सा एक कोयला कम्पनी को बेचने से इन्कार कर दिया। उन्हें डर था कि इससे ज़मीन बर्बाद हो जाएगी।

बीच के वर्षः आवाज़ की अभिव्यक्ति

1920 के दशक के मध्य में विज्ञान के क्षेत्र में पुरुषों का वर्चस्व था। पर रेचल वैज्ञानिक बनना चाहती थीं। उनके परिवार, मित्रों और शिक्षकों ने उन्हें चेताया कि एक स्त्री होने के नाते विज्ञान के क्षेत्र में रोज़गार पाने में उन्हें कठिनाई होगी। परन्तु इस संभावना ने उन्हें रोका नहीं। रेचल ने पेन्सिलवेनिया कॉलेज फॉर विमेन से जीवविज्ञान में स्नातक की डिग्री ली। इसके बाद उन्होंने बॉल्टीमोर, मेरीलैण्ड स्थित विख्यात जॉन हॉपकिन्स विश्वविद्यालय से जीवविज्ञान में मास्टर्स किया, जिसमें उनका अध्ययन समुद्री विज्ञान पर केन्द्रित था।

रेचल कार्सन पहली महिला थीं जिसे नॉनफिक्शन (तथ्यात्मक) श्रेणी में राष्ट्रीय पुस्तक पुरस्कार से नवाज़ा गया।

रेचल ने 1932 में अपनी डिग्री पाई, पर समय सही नहीं था। संयुक्त राज्य महामन्दी के दौर में डूबा हुआ था। तकरीबन 24 प्रतिशत लोग बेरोज़गार थे। रेचल भी कोई काम तलाश रही थीं, पर काम उपलब्ध ही नहीं था। रेचल के एक पूर्व प्रोफेसर ने उन्हें नागरिक सेवाओं की परीक्षा में बैठने की सलाह दी। यह परीक्षा सरकारी नौकरियों के लिए थी। रेचल को परीक्षा में अन्य आवेदकों से कहीं अधिक अंक मिले। वे इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाली पहली महिला थीं। नतीजतन उन्हें संयुक्त राज्य के ब्यूरो ऑफ फिशरीज़ में जूनियर जीवविज्ञानी के पद पर पूर्णकालिक काम मिला।

इस दौरान उन्होंने अखबारों व पत्रिकाओं के लिए भी लिखा। उन्होंने समुद्र पर एक लोकप्रिय पुस्तक लिखी। इसके लिए उन्हें राष्ट्रीय पुस्तक पुरस्कार दिया गया। यह सब रेचल ने उस दौरान किया जब वे अपनी माँ तथा अपनी बहन के दो बच्चों की देखभाल भी करती थीं।

बाद के वर्षः छोड़ना एक विरासत

1940 के मध्य में रेचल एक कीटनाशक डाईक्लोरो डाईफिनायल ट्राईक्लोरोथेन या डी.डी.टी. के उपयोग को लेकर बेहद चिन्तित हुईं। इसे कीटनाशक के रूप में विकसित किया गया था। पर रेचल ने पाया कि यह कीटों के अलावा अन्य पशुओं को भी नुकसान पहुँचाता है और समूचे पारिस्थितिकी तंत्र को नष्ट करता है। वे उम्मीद कर रही थीं कि कोई डी.डी.टी. के बारे में चेतावनी देगा। पर इस बीच वे खुद ही यह कदम उठाने पर मजबूर हुईं। जनवरी 1958 में रेचल को अपनी मित्र ओल्गा हचकिन्स का ख़त मिला। ख़ते में लिखा था कि ओल्गा के इलाके में मच्छरों से निजात पाने के लिए डी.डी.टी. का उपयोग किया गया था। इसके बाद ओल्गा को कई मृत पक्षी मिले थे। हचकिन्स ने रेचल से पूछा कि क्या रेचल इस विषय में कुछ कर सकती हैं - या क्या वे वॉशिंगटन डी.सी. में किसीको जानती हैं, जिनसे कह कर डी.डी.टी. का छिड़काव बन्द करवाया जा सके।

रेचल ने तब फैसला किया कि वे कीटनाशकों के इस अप्रत्याशित असर के बारे में लोगों को जागरूक करेंगी। सो उन्होंने इस पर शोध की और लिखना आरंभ किया। चार वर्षों बाद, 1962 में उनकी पुस्तक *साइलैन्ट स्प्रिंग्स* प्रकाशित हुई। कीटनाशक निर्माताओं ने रेचल का तगड़ा विरोध किया। उन्होंने रेचल को उन्मादग्रस्त स्त्री (हिस्टैरिकल वुमन) करार दिया। टाइम पत्रिका ने उनकी पुस्तक को भावनात्मक व भ्रामक विस्फोट कहा। पर विज्ञान रेचल के पक्ष में था। 1963 में राष्ट्रपति की सलाहकार समिति ने *साइलैन्ट स्प्रिंग* के निष्कर्षों की पुष्टि की।

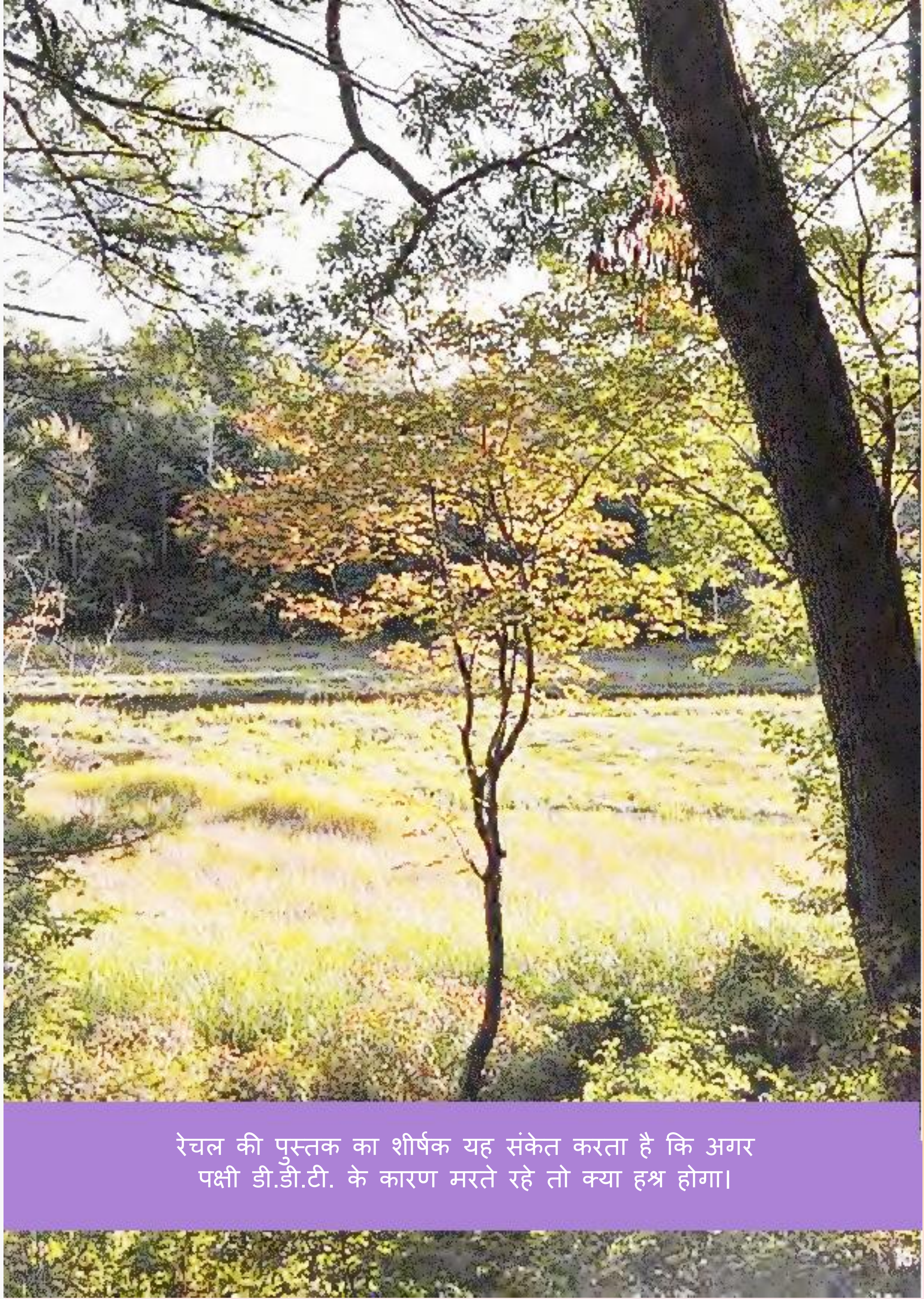

रेचल की पुस्तक का शीर्षक यह संकेत करता है कि अगर पक्षी डी.डी.टी. के कारण मरते रहे तो क्या हश्र होगा।

हालांकि बॉल्ड ईगल (गंजा गरुड़) बाद में पूरी तरह विलुप्त हो गया, 2007 तक उनकी आबादी बेहतर हुई और उन्हें लुप्तप्रायः प्रजातियों की सूची से हटा दिया गया था।

इसके फलस्वरूप पर्यावरण संरक्षण एजेंसी का गठन हुआ। विभिन्न राज्यों की विधान सभाओं ने भी कदम उठाए। 1962 के अन्त तक 40 राज्यों ने कीटनाशकों के उपयोग को नियंत्रित करने के नियम बनाए। डी.डी.टी. के विरुद्ध प्रमाण बढ़े। 1972 में संयुक्त राल्य अमरीका में इसे कार्सिनोजैन (कैंसर-कारक) घोषित कर दिया गया।

1964 में रेचल की मृत्यु हुई, पर उनका प्रभाव अब भी ज़िन्दा है। लुप्तप्राय प्रजाति कानून डी.डी.टी. पर प्रतिबंध लगने के साल भर बद पारित हुआ। बॉल्ड ईगल की प्रजाति जो डी.डी.टी. के कारण ख़तरे में आई थी, फिर से बेहतर हुई। टाइम पत्रिका ने अपनी राय बदली और 1999 में शताब्दी के 100 महत्वपूर्ण व्यक्तियों की सूची में उन्होंने रेचल को भी शामिल किया।

डी.डी.टी. पर प्रकाश

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान व बाद में भी डी.डी.टी. को चमत्कारिक रसायन घोषित किया गया था, जो मलेरिया तथा टायफस जैसे रोगों को फैलने से रोकता था। इसके आविष्कारक को 1948 में नोबेल पुरस्कार से नवाज़ा गया था। किसान अपनी फसलों को कीड़ों से बचाने के लिए इसका व्यापक उपयोग करते थे। 1942 से 1972 के बीच संयुक्त राज्य के खेतों में अनुमानतः 675,000 टन डी.डी.टी. का छिड़काव किया गया था। कई अफ्रीकी देशों में आज भी मलेरिया की रोकथाम के लिए डी.डी.टी. का उपयोग किया जाता है। उनका तर्क यह है कि इसके फायदे इसके नुकसानों से अधिक हैं।

फ्रीडा काहलो

(जन्म 6 जुलाई 1907)

फ्रीडा काहलो ने ज़िन्दगी को देखने के अपने अनूठे नज़रिए को अपनी तूलिका द्वारा अभिव्यक्त किया। वे अपनी 'सेल्फ पोर्टरेट' (आत्म-छवियों) के लिए खासतौर से जानी जाती हैं। उनकी कला उनके अनुभवों को प्रतिबिम्बित करती हैं। फ्रीडा ने 18 वर्ष की आयु में उन्हें अपंग कर देने वाली दुर्घटना के बाद चित्र आँकना शुरू किया था। स्वस्थ होने तक के दो वर्षों के दौरान चित्रांकन ने उन्हें इस बात पर सोचने का मौका दिया कि वे हैं कौन और उन्हें क्या महसूस होता है। उनकी आत्म-छवियाँ दर्शाती हैं कि सरल सत्य जैसा कुछ नहीं होता। लोग अपने जीवन को जीते हुए भिन्न-भिन्न पहचानों को अभिव्यक्त करते हैं।

आरंभिक वर्षः अपनी आवाज़ को तलाशना

रेचल कार्सन की ही तरह फ्रीडा की आवाज़ भी उनकी आरंभिक परिस्थितियों से गढ़ी गई थी। उनके पिता गिएरमो काहलो, सरकारी फोटोग्राफर थे और उन्होंने भवनों तथा परिदृश्यों का दस्तावेजीकरण किया था। वे अपने काम को फ्रीडा के साथ साझा करते थे। वे फ्रीडा को देश की संस्कृति और इतिहास के बारे में बताया करते थे। उन्होंने फ्रीडा में प्रकृति का प्रेम जगाया था। अपने समय के अन्य पालकों के विपरीत गिएरमो अपनी बेटी को आज़ादी देते थे। वे कहते थे कि फ्रीडा, फ्रीडा बनी रह सकती है, उसे दूसरों जैसी बनने की ज़रूरत नहीं है।

फ्रीडा की कलाकृतियाँ आज तक लोगों को प्रेरित करती हैं। 2016 में उनका एक चित्र 80 लाख डॉलर में बिका था।

6 वर्ष की आयु में फ्रीडा को पोलियो हुआ। रोग के चलते वे बिस्तर पर पड़ गईं। वे बिस्तर से उठ ही नहीं सकीं, और इस कारण वे 9 महीनों तक स्कूल भी नहीं जा सकीं। ठीक होने के बाद भी पोलियो ने अपनी छाप छोड़ी। उनका एक पैर पतला और कमज़ोर हो गया।

इस कारण स्कूल के दूसरे बच्चे उनका मज़ाक उड़ाया करते थे। वे अपने पैरों को कपड़े की तहों और कई मोज़ों से ढ़कने की कोशिश करती थीं। वे नहीं चाहती थीं कि लोग उन्हें दयाभाव से देखें या कमज़ार मानें। अपनी विकलांगता के बावजूद वे तैरती थीं, फुटबॉल खेलती थीं, कुश्ती लड़ती थीं और मुक्कबाज़ी भी करती थीं।

15 वर्ष की होने पर फ्रीडा मैक्सिको शहर में स्थित नैशनल प्रिपरेटरी स्कूल में पढ़ने गईं। स्कूल के कुल 2000 विद्यार्थियों में से सिर्फ 35 लड़कियाँ थीं। फ्रीडा उन 35 में एक थीं। फ्रीडा पढ़ाकू, दृढ़ और राजनीतिक रूप से सक्रिय थीं। उन्हें विज्ञान से प्यार था और वे डॉक्टर बनना चाहती थीं।

मैक्सिकी क्रान्ति

मैक्सिकी क्रान्ति 1910 में आरंभ हुई थी, फ्रीडा के जन्म के तीन वर्षों बाद। उस समय ज़मीन और सत्ता चन्द लोगों के हाथ में केन्द्रित थी। अधिकांश देशज और मेस्तिज़ो (मिश्रित नस्ल के लोग) इन धनी जमींदारों के लिए काम करते थे। उनकी अपनी कोई ज़मीन नहीं थी। क्रान्ति इसी समस्या का समाधान तलशने के लिए हुई थी, ताकि ज़मीन उन लोगों को मिले जो उस पर दरअसल काम करते थे।

क्रान्ति 1920 तक चली। इसके बाद आई सरकार ने सांस्कृतिक गर्व तथा साझा पहचान गढ़ने का प्रयास किया। नेताओं ने देश की जनता को मैक्सिको के अतीत, वर्तमान और भविष्य के बारे में शिक्षित करने के लिए कला का उपयोग किया।

लास सोलडाडेरास, मैकस्किो की क्रान्ति के दौरान महिला योद्धा थीं। वे नर्सों, सैनिकों व जासूसों की तरह काम करती थीं।

फ्रीडा ने 1929 में दिएगो से विवाह किया

फ्रीडा शैतान भी थीं। वे और उनके दोस्त अक्सर ख़ुराफ़ातें किया करते थे। इस वजह से उन्हें एक बार कुछ समय के लिए स्कूल से निकाल भी दिया गया था। पर उन्होंने बात कर फिर से उस प्रतिष्ठित अकादमी में प्रवेश पा लिया।

7 सितम्बर 1925 को फ्रीडा और उनके बॉयफ्रैन्ड स्कूल से बस लेकर घर आ रहे थे कि बस की टक्कर एक ट्राम से हो गई। लोहे से बनी कुर्सी का एक हत्था फ्रीडा के शरीर में घुस गया।। उनकी कूल्हे की हड्डी, हंसली, पसलियों और पैर की हड्डियाँ टूटीं। एक बार फिर उनका पूरा शरीर, कई महीनों तक पट्टियों में जकड़ा रहा।

फिर से सेहतमन्द होने के लम्बे काल में कला ने फ्रीडा की मदद की। उन्होंने अपने पिता के रंग, व कला सामग्रियाँ उधार लीं। उनके लिए बिस्तर पर ही एक विशेष ईज़ल बनवाया गया जिसके ऊपर एक आईना था, ताकि वे अपना ही चेहरा देख उसे आँक सकें। उसी बिस्तर पर पड़े-पड़े उन्हें अहसास हुआ कि वे कला के ही पथ पर आगे बढ़ना चाहती हैं।

बीच के वर्षः अभिव्यक्ति अपनी आवाज़ की

1927 के अन्त तक फ्रीडा फिर से अपने पैरों पर खड़ी हो चुकी थीं। उन्होंने अपने परिवार के लोगों और मित्रों के चित्र आँके। राजनीति में रुचि रखने वाले कलाकारों से मेल-जोल बढ़ाया। उन्होंने अपनी कला के बारे में प्रसिद्ध चित्रकार डिएगो रिवेरा से राय मांगी। दोनों में दोस्ती हुई और वे एक दूसरे के करीब होते गए। उन्होंने मिल कर मैक्सिको के तथा उसके बाहर के देशों में भी सांस्कृतिक, बौद्धिक व राजनीतिक नज़रिए को आकार दिया।

मैक्सिकैनिडाड

फ्रीडा तथा डिएगो रिवेरा की कला ने मैक्सिको के लोगों में मैक्सिकैनिडाड, अर्थात् मैक्सिको तथा मैस्तिज़ो विरासत के प्रति गर्व का भाव जगाया। उनके चित्रों के माध्यम से देश की साझी राष्ट्रीय पहचान की कल्पना करना संभव था, जिसमें अनेक सांस्कृतिक परंपराओं का मिश्रण था।

फ्रीडा के जीवनकाल में उन्हें *टू फ्रीडास्* नामक
चित्र के लिए सबसे अधिक पैसे मिले थे

फ्रीडा का जीवन हमेशा कैनवास पर रहा। यात्रा करते समय वे अपने अनुभवों को कला के माध्यम से ही समझती रहीं। उनका 1932 का चित्र *सैल्फ पोर्टरेट ऑन बॉर्डरलाइन बिटवीन मैक्सिको एण्ड द युनाइटेड स्टेटस्* दोनों देशों की तुलना करता है। मैक्सिको की भूमि पर फूल व फल हैं, जबकि संयुक्त राज्य अमरीका में मशीनें। मैक्सिको का परिदृश्य इतिहास से भरा है जबकि संयुक्त राज्य का उद्योग से। इन दो परिस्थितियों के बीच स्वयं को रख कर वे इस चित्र में उन संघर्षों को दर्शाती हैं जो व्यक्तिगत, सांस्कृतिक व राजनीतिक हैं। उनकी कलाकृति उस कालखण्ड के बड़े सामाजिक व राजनीतिक बदलावों पर भी कुछ कहती है। वह दर्शकों को यह सवाल उठाने पर भी मजबूर करती है कि मशीनों की दुनिया में आगे बढ़ते समय हमने क्या-क्या खोया है।

उनका चित्र *सैल्फ पोर्टरेट ऑन बॉर्डरलाइन बिटवीन मैक्सिको एण्ड द युनाइटेड स्टेटस्* 1932 में पूरा हुआ।

फ्रीडा काहलो अपने आत्म-छवियों के लिए सबसे अधिक जानी जाती हैं। उन्होंने अपने जीवन में 55 आत्म-छवियों को चित्रित किया।

बाद के वर्षः छोड़ना एक विरासत को

1930 के दशक के दौरान फ्रीडा की प्रतिष्ठा लगातार बढ़ी। न्यू यॉर्क शहर तथा पेरिस, फ्रांस में हुई प्रदर्शनियों ने अंतर्राष्ट्रीय कला-प्रमियों के समक्ष उनके कार्य को प्रस्तुत किया। समालोचकों ने अक्सर उनके कार्य को सर्रिअलिस्ट चित्रकारों के साथ रखा। पर फ्रीडा ने इस ठप्पे को अस्वीकार किया। उन्होंने कहा, ''मैं अपने स्वप्नों या दुःस्वपनों को नहीं आँकती। मैं अपने यथार्थ को चित्रित करती हूँ।''

फ्रीडा ने केवल मैक्सिकैनिडाड के अपने नज़रिए को ही अपनी कला के माध्यम से प्रस्तुत नहीं किया। वे सप्ताह में 12 कला कक्षाएं भी लेती थीं। जैसे-जैसे उनका स्वास्थ्य ढलने लगा, उनके विद्यार्थी जो स्वयं को 'लॉस फ्रीडोस' (फ्रीडा के अनुयायी) कहा करते थे, कक्षाओं के लिए उनके घर आने लगे। उन्होंने मैक्सिको की कला राजदूत की तरह काम किया, और मैक्सिको की कला को दुनिया के समक्ष प्रस्तुत किया।

उत्तरी अमरीका तथा यूरोप में विख्यात होने के बावजूद फ्रीडा की मैक्सिको में एकल प्रदर्शनी नहीं हो पाई थी। यह स्थिति अप्रेल 1955 में बदली। प्रदर्शनी के कुछ दिन पहले फ्रीडा के चिकित्सक ने कहा कि वे इतनी बीमार हैं कि बिस्तर से उठ ही नहीं सकती। पर इस उद्घाटन से वंचित रहने के बदले वे अपने बिस्तर समेत कला दीर्घा में पहुँचीं। वे एम्बुलैंस से आईं बिस्तर पर लेटे-लेटे ही समारोह में भागीदारी की। इस घटना के साल भर से कुछ अधिक समय बाद 47 वर्ष की उम्र में उनका देहान्त हो गया। जीवन के अन्त तक वे स्वयं अपने लिए बोलती रहीं और खुद का प्रतिनिधित्व करती रहीं।

TIMELINE कालक्रम

1907 1910 1920 1930 1938 1948 1950 1960 1972

May 27, 1907
रेचल कार्सन का पेन्सिलवेनिया में जन्म।

July 6, 1907
फ्रीडा काहलो का मैक्सिको के शहर कोयोआकान में जन्म।

1910
मैक्सिकी क्रान्ति का आरंभ।

1914
फ्रीडा को पोलिओ का रोग हुआ।

September 1918
रेचल की पहली कहानी *सेंट निकोलस* पत्रिका में प्रकाशित हुई।

1925
बस दुर्घटना में फ्रीडा को गंभीर चोटें आईं।

1929
रेचल ने पेन्सिलवेनिया कॉलेज फॉर विमेन से जीवविज्ञान में स्नातक किया।

1929
फ्रीडा ने चित्रकार डिएगो रिवेरा से विवाह किया।

1932
रेचल ने जॉन हॉपकिन्स विश्वविद्यालय से मास्टर्स की उपाधि ली।

1936
रेचल को यू.एस. ब्यूरो ऑफ फिशरीज़ में काम मिला।

1938
न्यू यॉर्क शहर में फ्रीडा के चित्रों की प्रदर्शनी लगी।

1939
विख्यात अजायबघर लूव्र ने फ्रीडा का चित्र खरीदा।

1948
पॉल हारमन म्युलर को डी.डी.टी. के आविष्कार के लिए फिज़ियोलॉजी ऑफ मेडिसिन की श्रेणी में नोबेल पुरस्कार दिया गया।

1953
अप्रेल में मैक्सिको शहर में फ्रीडा की पहली एकल प्रदर्शनी लगी।

1954
मैक्सिको, शहर में फ्रीडा की मृत्यु हुई।

1962
साइलैन्ट स्प्रिंग का प्रकाशन हुआ।

1963
राष्ट्रपति की सलाहकार समिति ने *साइलैन्ट स्प्रिंग* के नतीजों की पुष्टि की।

1964
रेचल की मेरीलैण्ड सिल्वर स्प्रिंग में मृत्यु हो गई।

1972
संयुक्त राज्य अमरीका में डी.डी.टी. पर प्रतिबंध लगाया गया।